टिप्पणी

321hi30B

30

रंग

जरा रंगहीन विश्व की कल्पना करिये, यह कैसा लगेगा? नितान्त बदरंग और उबाऊ। वर्ण या रंग वातावरण में प्रसन्नता और दिलचस्पी पैदा करते हैं। रंग और सुंदर नमूने आकर्षक कशीदाकारी की संरचना करने में अंतरंग भूमिका निभाते हैं। आप पाठ 29 में पहले ही नमूनों के विषय में पढ़ चुके हैं। इस पाठ में आप कार्य को प्रारम्भ करने और उसे सरल बनाने के लिये आवश्यक विभिन्न रंग समायोजनों के विषय में विस्तार पूर्वक पढ़ेंगे। थोड़े से अभ्यास के बाद आप रंगों का चुनाव स्वयमेव ही करने लगेंगे। क्या आपने कभी स्त्रियों और पुरूषों को घर पर यह कलात्मक कार्य करते देखा है? उनमें कुछ अत्यंत सुंदर रंग समायोजन कर पाते हैं, जबकि अन्य नहीं कर पाते। उन्हें किसने यह सब सिखाया? उन्होंने अपने बड़ों को घर पर ऐसा करते हुये देखकर ही सीखा है। लेकिन निरन्तर अभ्यास और प्रयोग करते हुये आप अधिक प्रभावशाली रंग समायोजन के विषय में भी ज्ञान अर्जित कर सकते हैं।

आइये सुखद प्रभाव पैदा करने वाले रंगों और उनकी आयोजना के विषय में कुछ आधारभूत बाते जानें।

उद्देश्य

इस पाठ को पढ़ने के बाद आप निम्नलिखित कर पायेंगे–

- रंगों का विभिन्न वर्गों में विभाजन;
- रंग चक्र बनाना;
- रंगों की विशेषताओं की व्याख्या;
- विभिन्न रंग योजनाओं की पहचान और विवरण;
- रंगों के सांकेतिक अर्थ और मनोवैज्ञानिक प्रभावों का विवरण;
- किसी नमूने में रंग भरने के लिये रंग योजना प्रयोग करना।

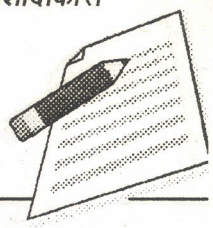

टिप्पणी

30.1 रंगों का वर्गीकरण

हमारे चारों और कई रंग हैं। रंगों को व्यवस्थित करने और उनकी पहचान करने के लिये रंगों के वर्गीकरण की युक्ति की गयी है। प्रांग के 12 रंगों वाले रंग चक्र से हम सबसे अधिक परिचित हैं। ये रंग या तो उनके मूल स्रोत या उनके गुणों के आधार पर वर्गीकृत किये जा सकते हैं। सबसे अधिक प्रचलित वर्गीकरण निम्न है–

(1) प्राथमिक, द्वितीयक और तृतीयक रंग

(2) गर्म और ठंडे रंग

(3) निष्प्रभावी रंग (neutral)

1. प्राथमिक, द्वितीयक और तृतीयक रंग

प्राथमिक रंग

लाल, पीला और नीला प्राथमिक रंग है। ये तीनों रंग अन्य रंगों का आधार हैं और इनसे अन्य रंग भी बनाये जा सकते हैं।

द्वितीयक रंग

दो प्राथमिक रंगों को बराबर मात्रा में मिलाकर बनने वाले रंगों को द्वितीयक रंग कहते हैं। ये रंग नारंगी, हरा और बैंजनी हैं।

तृतीयक रंग

इन्हें एक प्राथमिक और एक द्वितीयक रंग को बराबर मात्रा में मिलाकर बनाया जाता है। उदाहरण के लिये नीला (प्राथमिक) और हरा (द्वितीयक) को मिलाकर नीला हरा तृतीयक रंग बनाया जाता है।

पीला + नारंगी	= पीला नारंगी
लाल + नारंगी	= लाल नारंगी
लाल + बैंजनी	= लाल बैंजनी
नीला + बैंजनी	= नीला बैंजनी
नीला + हरा	= नीला हरा
पीला + हरा	= पीला हरा

तीन प्राथमिक, तीन द्वितीयक और छः तृतीयक रंगों से हमें हमारे बारह रंगों का समूह प्राप्त होता है।

परम्परागत भारतीय कशीदाकारी में इन सभी रंगों को विभिन्न शेड़ों में प्रयोग किया जाता है।

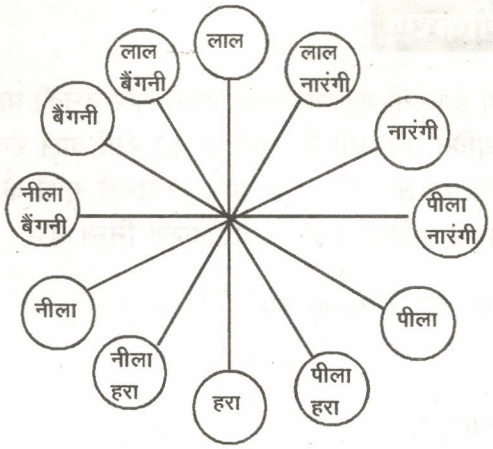

चित्र 30.1 रंग चक्र

क्रियाकलाप 30.1

6 इंच व्यास का वृत्त बनाकर रंग चक्र बनाइये। इसे अपनी नमूनों की पुस्तिका में लगाइये।

संकेतः 1 बूंद नीला + 1 बूंद बैंजनी = 2 बूंद नीला बैंजनी

2. गर्म और ठंडे रंग

एक रंग चक्र बनाइये। चित्र में दिखाये गये अनुसार इस चक्र के बीचों बीच ऊपर से नीचे एक रेखा खींचिये। यदि आप इस रंग चक्र को ऊपर से नीचे की ओर विभाजित कर दें तो आप देखेंगे कि एक ओर गर्म रंग होंगे और दूसरी ओर ठंडे रंग।

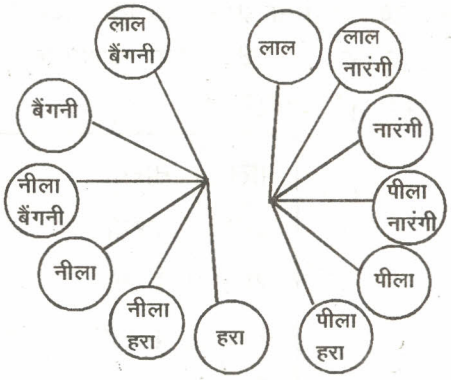

चित्र 30.2 गर्म और ठंडे रंग

गर्म रंग

गर्म रंग लाल, नारंगी, पीला आदि हैं। इन रंगों में अग्नि या सूर्य का तत्त्व होता है। ये गरमाहट की अनुभूति देते हैं। इनसे छोटे आकार और लम्बाई का भ्रम होता है। ये रंग उत्साह देने वाले होते हैं और उत्तेजना व प्रसन्नता का आभास कराते हैं।

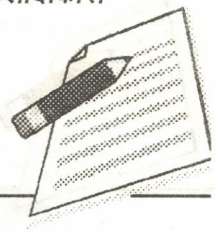

टिप्पणी

व प्रसन्नता का आभास कराते हैं। आप देखेंगे कि परम्परागत भारतीय कशीदाकारी में इन रंगों का बहुतायत से प्रयोग किया जाता है। चूँकि अधिकांश भारी कशीदाकारी विवाह या जन्मोत्सवों जैसे अवसरों के लिये की जाती है, अतः इन रंगों का उपयोग स्वाभाविक है।

ठंडे रंग

ये रंग नीले, हरे, बैंजनी आदि हैं। इनमें वनस्पति या जल तत्त्व होता है इनसे ठंडक की अनुभूति होती है। ये शांतिदायक रंग होते हैं जो आराम और शांति का अनुभव कराते हैं। इन रंगों को ग्रीष्मकाल के लिये बनाये गये कशीदे में प्रयोग किया जा सकता है। ये आकर्षक गर्म रंगों को भी संतुलित करते हैं। गर्म और ठंडे रंग एक दूसरे के पूरक होते हैं और हमेशा दिलचस्प प्रभाव की रचना करते हैं।

हरे और बैंगनी रंगों की गर्माहट और ठंडक जो एक गर्म और एक ठंडे रंग के मिश्रण से प्राप्त होती है, वह इस बात पर निर्भर करते हैं कि द्वितीयक रंग को बनाने के लिए कितने प्राथमिक रंग का प्रयोग किया गया है।

3. निष्प्रभावी रंग

क्या आपने गौर किया कि हमने अभी तक सफेद, काले, स्लेटी, भूरे, तांबई, हल्के पीले रंगों आदि के विषय में बात नहीं की है। ये सभी निष्प्रभावी उदासीन रंग कहलाते हैं। ये किसी भी कशीदाकारी का महत्त्वपूर्ण हिस्सा हैं क्योंकि ये गहरे रंगों के लिये अत्यंत प्रभावशाली पृष्ठभूमि प्रदान करते हैं। जब भी हम सही रंग योजना के विषय में आश्वस्त नहीं होते तब निष्प्रभावी रंग बहुत ही उपयोगी साबित होते हैं।

4. धातु रंग

धातु की चमक दमक ने मानव को सदैव ही आकर्षित किया है। कशीदाकारी के संदर्भ में इन रंगों का काफी महत्त्व है और प्राचीन काल से ही इनका प्रयोग कशीदे में होता रहा है। धातु के तारों को धागे की बारीकी तक पीटा जाता है और इन तारों को कशीदे के लिये प्रयोग किया जाता है। साधारण सुनहरे और चांदी के तार बादला कहलाते हैं और जब इन तारों को किसी धागे पर लपेटा जाता है, तब इन्हें कसब कहा जाता है। धातु की छोटी–छोटी बिंदुओं को मुकैश कहा जाता है।

सच्चे सोने और चांदी को प्रयोग करने के दिन अब इतिहास की बात हो गयी है। अब आपको केवल जरी या टेस्टेड जरी ही मिलती है।

पाठगत प्रश्न 30.1

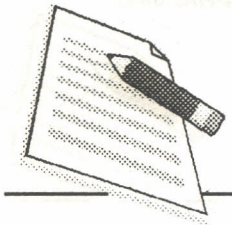

2. नीचे दिये गये समीकरण को पूरा करें –

(i) लाल + नीला = ...

(ii) पीला + ... = पीला नारंगी

(iii) .... + हरा = नीला हरा

30.2 रंगों की विशेषताएं

प्रत्येक वस्तु के तीन आयाम अर्थात लम्बाई, चौड़ाई और ऊँचाई की भांति रंगों के भी तीन आयाम होते हैं। और उनकी व्याख्या ह्यू, वैल्यू और इंटेनसिटी के रूप में की जाती है।

ह्यू: ह्यू (का अर्थ) किसी रंग का नाम है। उदाहरण के लिये लाल, नारंगी, नीला आदि।

वैल्यू: रंग का हल्कापन या गहरापन है। किसी भी रंग में सफेद मिला देने से हल्का रंग प्राप्त होता है। इसे टिन्ट कहते हैं। किसी रंग में काला रंग मिला देने से गहरा रंग प्राप्त होता है। इसे शेड या टोन कहते हैं। टिन्ट और टोन विशेष रूप से तब उपयोगी होते हैं जब आप एक प्राकृतिक नमूने की कढ़ाई कर रहे हों। उदाहरण के लिये यदि आपको एक फूल काढ़ना हो, तब आप एक रंग दो टिन्ट और एक टोन के साथ प्रयोग कर सकते हैं। फल, पक्षी, प्राकृतिक दृश्य आदि के नमूनों को भी इस तरह काढ़ा जा सकता है।

इंटेन्सिटी: इंटेन्सिटी का अर्थ किसी रंग के तेज और हल्केपन है। किसी कशीदे में सभी चमकीले या सभी हल्के रंगों का प्रयोग किया जाय तो वह संतुलित नहीं दिखेगा। अतः उचित अनुपात में चमकीले और हल्के रंगों का उपयोग करना अच्छा रहेगा उदाहरण के लिये लाल और सुनहरे पीले रंग के फूल, हरी पत्तियों और भूरी टहनियों के साथ संतुलित लगेंगे। रंगों की तीव्रता बढ़ाने के लिये एक दूसरे के पास–पास विरोधाभासी रंगों का प्रयोग करें। इस प्रकार के रंगों का प्रयोग अत्यंत चटक रंग योजना उत्पन्न करते हैं। उदाहरण के लिये लाल और तोतई हरा रंग।

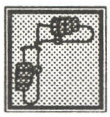

क्रियाकलाप 30.2: बाजार का सर्वेक्षण : बाजार में उपलब्ध कशीदाकारी के धागों के विभिन्न रंगों का सर्वेक्षण करिये। अपने फाइल/चार्ट पेपर पर तीन कशीदेकारी के धागों को निम्न संवर्गो के अनुसार चिपकाइये।

(1) प्राथमिक रंग
(2) द्वितीयक रंग
(3) तृतीयक रंग
(4) गर्म रंग
(5) ठंडे रंग

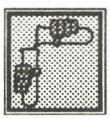

क्रियाकलाप 30.3: एक प्राथमिक रंग के पांच शेड और पांच टोन के धागों को अपनी फाइल में चिपकाइये।

टिप्पणी

पाठगत प्रश्न 30.2

1. निम्न के लिये एक शब्द लिखिये।
   1. रंग के तेज और हल्कापन .....
   2. रंग का हल्कापन और गहरापन .....
   3. रंग का तकनीकी नाम .....
   4. एक ज्यादा हल्का रंग .....
   5. एक ज्यादा गहरा रंग .....

30.3 वर्ण आयोजना

कोई भी रंग संयोजन जो आंखों को प्रिय लगता हो, वह रंग योजना कहलाता है। जब भी एक से अधिक रंग एक दूसरे के पास रखे जाएं, तब एक रंग योजना स्वयमेव ही बन जाती है।

जब आप एक से अधिक रंगों का प्रयोग करें तब एक निश्चित योजना के अंतर्गत आप हमेशा सुंदर प्रभाव उत्पन्न कर सकते हैं। विभिन्न रंग योजनाएं हैं–

(1) मोनोक्रोमेटिक रंग योजना

(2) समीपवर्ती (ऐनालोगस) रंग योजना

(3) पूरक (कॉम्पलिमेंटरी) रंग योजना

(4) विभक्त पूरक (स्प्लिट कॉम्पलिमेंटरी) रंग योजना

(5) त्रिकोणीय (ट्रायड) रंग योजना

(6) चतुर्भुज (टेट्राड) रंग योजना

1) **मोनोक्रोमेटिक रंग योजना** में एक ही रंग का प्रयोग होता है। इसमें एक ही रंग के टिन्ट और शेड होते हैं। उदाहरण के लिये एक हल्के नीले कुर्ते पर आप आसमानी नीले, गहरे नीले और नेवी ब्लू नमूने काढ़ें या लखनऊ की चिकनकारी जिसमें नमूने सफेद कपड़े पर सफेद ही धागों से काढ़े जाते हैं। इस प्रकार की योजना काफी आरामदेह, बनाने में अत्यंत सरल और हमेशा सफल होती है।

टिप्पणी

2) **समीपवर्ती (एनालॉगस) रंग योजना**– इस रंग योजना में रंग चक्र में स्थित पास पास रंगों का प्रयोग होता है। इस प्रकार की योजना में कम से कम एक रंग सामान्य होता है। उदाहरण के लिये पीले फूल, पीली हरी पत्तियां और हरी टहनियों को काढ़ा जा सकता है। यह अत्यंत सुंदर रंग संयोजन होता है। यदि इसमें सलमे सितारे भी प्रयोग करें तब यह काफी चित्ताकर्षक और सुंदर योजना लगती है।

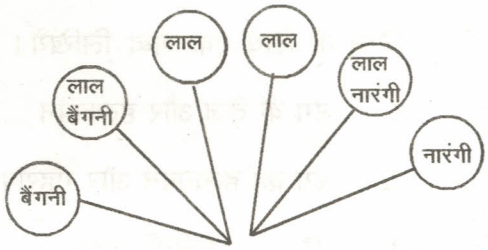

(a) (b)

चित्र 30.3

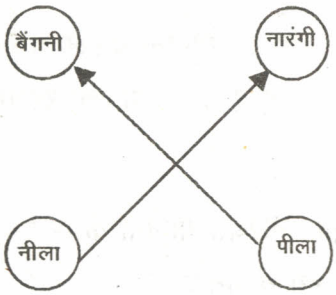

चित्र 30.4

(3) **पूरक रंग योजना** – यह एक द्विरंगीय योजना होती है। इसमें वे रंग प्रयोग किये जाते हैं जो रंग चक्र में एक दूसरे के विपरीत स्थित हों। उदाहरण के लिये लाल व हरा। अपने बनाये गये रंग चक्र पर नजर डालिये। इस चक्र के 12 रंगों से हमें 6 ऐसे रंगों के जोड़े प्राप्त होंगे। आइये इनकी सूची बनायें –

- पीला और बैंजनी
- नारंगी और नीला
- लाल और हरा
- पीला हरा और लाल बैंजनी
- नीला हरा और लाल नारंगी
- नीला बैंजनी और पीला नारंगी

इस रंग योजना के परिणाम अत्यंत चमकदार और सुंदर रंग संयोजन वाले होते हैं। यह खासतौर पर उत्सवों पर पहनने के लिये व बच्चों के कपड़ों के लिये उपयुक्त होते हैं जैसे शादी विवाह के लिये। यदि आप इन रंगों की वैल्यू या तीव्रता को बदल दें तो यह रंग योजना बड़ों के लिये, गर्मियों के कपड़ों के लिये प्रयुक्त की जा सकती है। उदाहरण के लिये आसमानी और गुलाबी रंगों की कशीदाकारी के साथ गर्मियों में हल्का सूट अत्यंत ताजगी भरा लगेगा। पूरक रंग

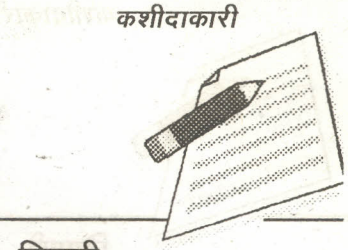

टिप्पणी

योजना प्रयोग करते समय इस बात का ध्यान रखें कि एक रंग प्रमुख हो जबकि अन्य गौण या दबे हुये हों।

(4) **विभक्त पूरक स्प्लिट कॉम्पलिमेंटरी रंग योजना** – यह तीन रंगों वाली योजना है। यह किसी भी एक रंग और उसके पूरक रंगों को दो भागों में विभाजित करके बनाई जाती है। जैसे पीला, लाल बैंजनी और नीला बैंजनी (बैंजनी रंग पीले रंग का पूरक रंग होता है)।

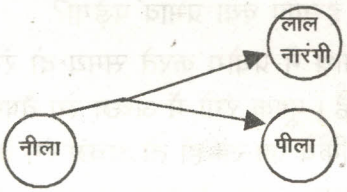

चित्र 30.5

आप किसी बच्ची की फ्रॉक पर एक पीला नारंगी और लाल नारंगी सूर्य नीले बादलों के साथ काढ़ सकते हैं। पुनः आप यह देखेंगे कि विभक्त पूरक रंग योजना के वैल्यू और तीव्रता को बढ़ा या घटा कर इसे प्रत्येक आयु वर्ग, अवसर और मौसम के अनुकूल बनाया जा सकता है।

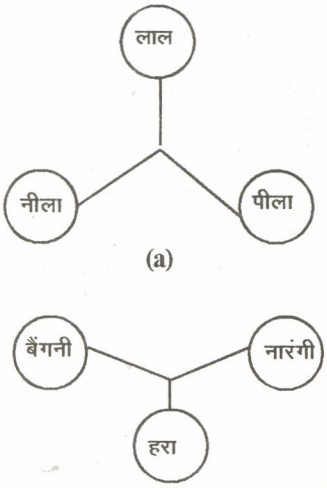

चित्र 30.6

(5) **त्रिकोणीय (ट्रायड) रंग योजना**:- यह तीन रंगों वाली योजना है। इसमें ऐसे किन्हीं तीन रंगों का संयोजन होता है जो रंग चक्र में समभुज त्रिकोण की रचना करते हैं। उदाहरण के लिये पीला, लाल और नीला या नारंगी, हरा और बैंजनी।

समभुज त्रिकोण वह त्रिकोण है जिसमें तीनों भुजाएं समान हों।

(6) **चतुर्भज (टेट्राड) रंग योजना** : यह चार रंगों वाली योजना है। यह ऐसे किन्हीं चार रंगों का संयोजन करता है जो रंग चक्र में एक वर्ग की रचना करते हों। ऐसी रंग योजना जम्मू और कश्मीर के कशीदे में, बंगाल के कांथा में और हिमाचल प्रदेश के चम्बारूमाल में प्रयुक्त होती है।

उदाहरण के लिए हरा, पीला नारंगी, लाल और नीला बैंजनी।

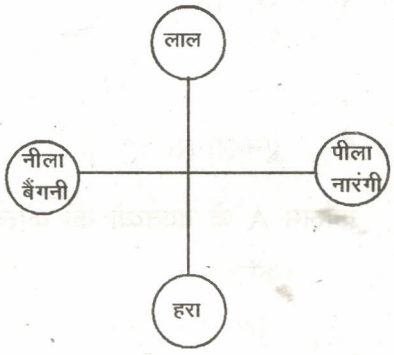

चित्र 30.7

टिप्पणी

रंगों का चुनाव किसी डिज़ाइनर के लिये सबसे महत्त्वपूर्ण निर्णय होता है। लेकिन इस प्रकार के निर्णय लेने से पहले यह देखना जरूरी है कि रंगों के संयोजन का प्रभाव कैसा पड़ेगा और प्रत्येक रंग जब अकेले या अन्य रंगों के साथ मिलाकर प्रयोग किया जाता है तब इसका क्या प्रभाव पड़ेगा?

यदि साथ में प्रयोग करते समय दो रंग आकर्षक लगें तो उन्हें विरोधाभासी/विषम रंग कहते हैं। पूरक रंगों में अच्छा रंग वैषम्य होता है। जब दो रंग के हल्के और गहरे शेड प्रयोग किये जा रहे हों तो अच्छा रंग वैषम्य होता है, उदाहरण के लिये हल्का पीला और गहरा लाल। इस सिद्धान्त का सबसे उत्कृष्ट उदाहरण काले और सफेद रंग का वैषम्य है।

इस वैषम्य को किसी नमूने की बाहरी रेखाओं पर सफेद और काले रंग का प्रयोग करके उभारा जा सकता है। यदि आप किसी डिज़ायन का बॉर्डर काला रखें तो यह पूरे डिज़ायन को हल्का और चमकदार दिखने का आभास देगा। रंगों को विभक्त करती हुयी काली और सफेद रेखा प्रत्येक रंग को अधिक उभार देती है।

रंग चक्र के आस पास के रंग एक दूसरे के साथ अधिक मेल खाते हैं अतः वे पूर्णरूपेण एक आकर्षक प्रभाव उत्पन्न करते हैं।

रंग मिश्रण

हल्का पीला और गहरा हरा या हल्का गुलाबी और बैंजनी आदि मिश्रित रंगों के उदाहरण हैं जो शांतिपूर्ण और आकर्षक प्रभाव उत्पन्न करते हैं।

क्रियाकलाप 30.4: शेडकार्ड या कशीदाकारी के धागों की लच्छियों को रंगों के मिश्रित और विषम संयोजन प्राप्त करने के लिये प्रयोग करें। कम से कम 5 रंगों के संयोजनों को अपनी नोट बुक में रंग चित्र की सहायता से दिखायें।

पाठगत प्रश्न 30.3

I. बताइये निम्न वक्तव्य सही हैं या गलत।

1. एक ही रंग के शेड और टिन्ट को मोनोक्रोमेटिक रंग योजना कहते हैं।
2. लाल, नीला हरा और पीला हरा त्रिकोणीय रंग योजना बनाते हैं।
3. रंग चक्र में एक दूसरे के विपरीत स्थान पर स्थित रंगों को पूरक रंग कहते हैं।
4. रंग चक्र में समभुज रखे गये रंगों को विभक्त पूरक रंग योजना कहते हैं।
5. एनालॉगस रंग योजना को समीप रंगों की योजना भी कहते हैं।

II. कॉलम A के वक्तव्यों का कॉलम B के वक्तव्यों से मिलान करिये।

कॉलम A	कॉलम B
(1) पीला और बैंजनी	(a) विभक्त पूरक रंग योजना
(2) पीला, लाल बैंजनी, नीला बैंजनी	(b) त्रिकोणीय रंग योजना

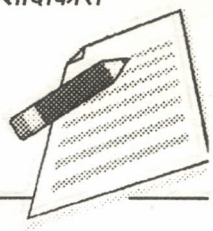

टिप्पणी

(3) लाल, पीला, नीला

(4) हरा, पीला नारंगी, लाल, नीला बैंजनी

(c) चतुर्भज रंग योजना

(d) पूरक रंग योजना

(e) मोनोक्रोमेटिक रंग योजना

30.5 दैनिक जीवन में रंगों का महत्त्व

रंगों का इतिहास मानव के इतिहास जितना ही पुराना है। आदिमानव रंगों में जादूई विशेषताएं देखता था। मानव के कपड़े पहनने से काफी पहले भी वह अपने शरीर को प्राकृतिक स्रोतों जैसे बेर से प्राप्त रंगों से सजाता था।

भिन्न–भिन्न रंगों के अर्थ भी भिन्न होते हैं। हमारे ऊपर प्रत्येक रंग का मनोवैज्ञानिक प्रभाव पड़ता है। लाल रंग जो अग्नि का प्रतीक है, उसका अर्थ हमारे लिये ताप/गर्मी है। हरा जो ताजा अंकुरित पौधों का प्रतीक है वह ताजगी देता है और सुनहरा जो सूर्य के प्रकाश का द्योतक है, वह प्रसन्नता का प्रतीक है। संसार के अलग–अलग भागों में भी रंगों का अर्थ भिन्न–भिन्न होता है। उदाहरण के लिये काला रंग पश्चिमी देशों में शोक का प्रतीक है जबकि भारत और चीन में लोग शोक मनाने के लिये सफेद वस्त्र पहनते हैं। भारत में कुछ दुल्हनें लाल वस्त्र पहनती हैं जबकि कुछ अन्य स्थानों/क्षेत्रों में लड़कियां सफेद और सुनहरे/लाल कपड़े पहनती है। आइये अब इन प्रभावों के विषय में पढ़ें ताकि हम रंगों का प्रभावशाली ढ़ंग से प्रयोग कर सकें।

रंग	प्रभाव
गहरा लाल	प्रेम, स्वास्थ्य, जीवन्तता
चमकीला लाल	भावावेश, खतरा
गहरा स्लेटी, लाल	बुराई
गुलाबी	स्त्रियोचित, उत्सव, नाजुकता, मासूमियत
नारंगी	महत्वकांक्षा, उत्साह
भूरा	उपयोगिता, परिपक्वता
पीला	प्रेरणादायक, विवेक, प्रसन्नता
गहरा सुनहरा	विलासपूर्ण, मूल्यवान
पीला, हरा	ताजगी, यौवन
नीला	शान्ति, संवेदनशील, आदर्शवादिता
बैंजनी	भव्यता, राजवंशीय

30.6 दैनिक जीवन में रंगों के प्रयोग को प्रभावित करने वाले कारक

– व्यक्ति की आयु

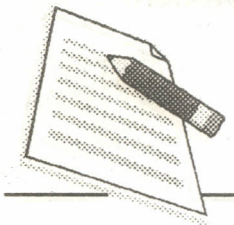

टिप्पणी

- व्यक्ति का लिंग
- व्यवसाय
- अवसर
- मौसम
- पहने जाने वाले कपड़ों का प्रकार
- व्यक्ति की शारीरिक बनावट

जब भी आपको किसी व्यक्ति के लिये कपड़ों का चुनाव करना हो उसकी आयु और लिंग पर ध्यान देना आवश्यक है। बच्चे और युवा चटकीले वस्त्रों में अच्छे लगते हैं। वृद्ध लोगों को जिम्मेदार दिखना चाहिये अतः उनके लिये आप इसी तरह के रंगों का चुनाव कर सकते हैं। पुरूषों को परिपक्व लगना चाहिये और उनके कार्य क्षेत्र को ध्यान में रखते हुये उन्हें बलिष्ठ और भरोसे वाला दिखना चाहिये। अतः रंगों का चुनाव भी उसी प्रकार का होना चाहिये।

अवसर भी रंगों के चुनाव में महत्त्वपूर्ण भूमिका निभाते हैं। रंगों के चुनाव से पहले यह सुनिश्चित करें कि अवसर कौन सा है, अर्थात यदि शादी या विवाह का अवसर हो तो इसका ध्यान अवश्य रखें कि शादी का समारोह शाम को होगा या सुबह का।

रंगों का चुनाव मौसम पर भी निर्भर करता है। हम गर्मियों के मौसम में ठंडे, ताजे और कोमल या चमकीले, गहरे और आकर्षक रंगों का प्रयोग कर सकते हैं। रंगों के चुनाव पर पहने जाने वाले वस्त्रों के प्रकार का भी प्रभाव पड़ता है। पश्चिमी पोशाक पर कढ़ाई के लिये प्रयोग किये जाने वाले रंग निश्चित रूप से साड़ी और लहंगे पर प्रयुक्त रंगों से भिन्न होंगे। रंगों के चुनाव से पहले व्यक्ति के कद और वजन का ध्यान अवश्य रखें। विशेष शारीरिक बनावट जैसे लम्बी टांगे, पतली कमर या चौड़े कूल्हों का ध्यान भी अवश्य रखें। रंगों के विषय में अच्छी जानकारी और समझ से आप शारीरिक बनावट के अच्छे पहलुओं को उभार सकते हैं।

रंग आपके हाथ में एक अत्यंत प्रभावशाली शस्त्र है – एक ऐसा शस्त्र जिसकी सहायता से आप अत्यंत आकर्षक और मिश्रित प्रभाव उत्पन्न कर सकते हैं। आप बस इतना ही करें कि अच्छे परिणामों को प्राप्त करने के लिये थोड़ा अभ्यास करें।

पाठगत प्रश्न 30.4

(1) निम्न के लिये आप जो सबसे उचित रंग समझते हों, उन्हे लिखें –

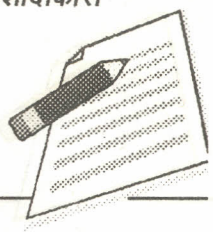

टिप्पणी

6. शयनकक्ष की चादर .....

7. बच्चों के फैन्सी ड्रेस शो के लिये राजा की पोशाक .....

पाठान्त प्रश्न

1. संबंधित रंग योजनाएं कौन सी हैं? रंग चक्र की सहायता से समझाइये।
2. रंगों के चुनाव को प्रभावित करने वाले कारकों की सूची बनाइये। उदाहरण देकर समझाइये।
3. पूरक और विभक्त पूरक रंग योजना की समानताएं और भिन्नताओं की सूची बनाइये।
4. दी गयी स्थिति के अनुसार निम्न प्रश्नों के उत्तर दीजिये –

   स्थिति :- एक प्रौढ़ व्यक्ति शाम की पार्टी के लिये नेवी ब्लू थ्री पीस सूट पहन रहा है।

   (a) मोनोक्रोमेटिक रंग योजना और एनालॉगस रंग योजना में कमीज के लिये दो रंगों के नाम लिखिये।

   (b) टाइ और जेबी रूमाल के लिये पूरक रंग का नाम लिखिये।
5. प्राथमिक, द्वितीयक और तृतीयक रंगों के बीच क्या संबंध है? रंग चक्र का उपयोग करते हुये बताइये। तृतीयक रंग किस प्रकार तैयार किये जाते हैं?
6. 8"x8" के वर्ग में भिन्न–भिन्न ज्यामितीय आकार बनाइये। अब उस नमूने को (a) प्राथमिक रंग, (b) तृतीयक रंगों से रंगिये।

आपने क्या सीखा?

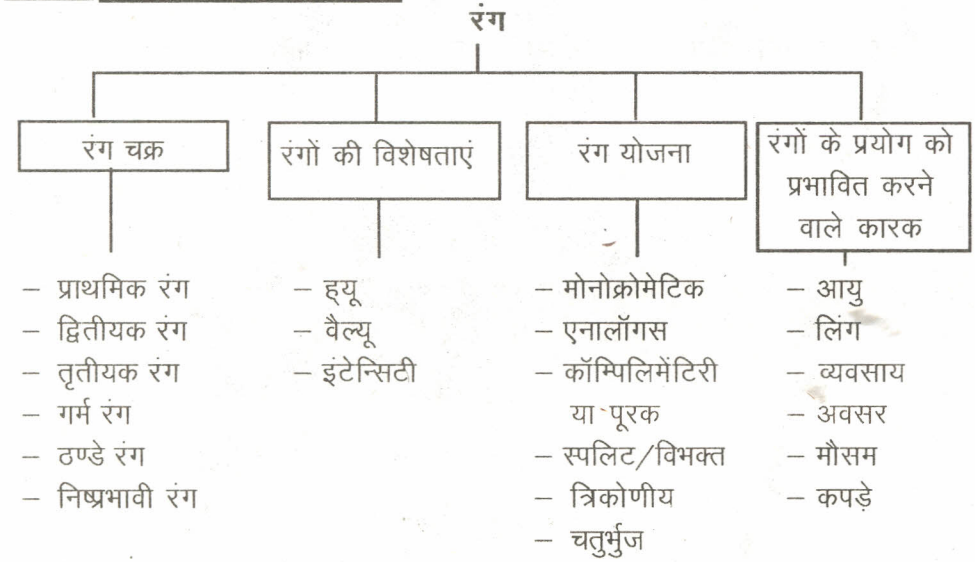

पाठगत प्रश्नों के उत्तर

30.1 1. (i) पीला, नीला

(ii) निष्प्रभावी

(iii) प्राथमिक, द्वितीयक

(iv) निष्प्रभावी

(v) गरमाहट

2. (i) बैंगनी (ii) नारंगी (iii) नीला

30.2 1. इंटेन्सिटी

2. वैल्यू

3. ह्यू

4. टिन्ट

5. शेड/टोन

30.3 1. सत्य 4. असत्य

2. असत्य 5. सत्य

3. सत्य

II. 1. (d) 2. (a) 3. (b) 4. (c)

30.4 1) लाल/सफेद 2) गुलाबी 3) पीला/हरा/नीला 4) भूरा/स्लेटी

5) नारंगी/पीला 6) नीला 7) बैंजनी/सुनहरा